Keep Visiting : www.gurdeepsingh.jimdo.com & www.gyansclasses.jimdo.com
Also Visit : www.niwasbuilders.com & www.mayadentalclinic.jimdo.com

साधना

डा. दिनेश चमोला ''शैलेश''

विशाल शुष्क चट्टान और लहराता हुआ हरा-भरा जंगल आमने-सामने रहते थे कालांतर से। जंगल को अपनी हरियाली पर गर्व था। वह जब-तब रूखी चट्टान को व्यंग्य के स्वर में कहता-

'बंधु'! मुझे दुख है कि तुम्हारे पापों के कारण ईश्वर ने तुम्हें इतना गंजा बनाया कि तुममें प्रकृति खिल नहीं सकती...भला तुम ऐसे में क्या संदेश दोगे जगत को ?

'यह तुम्हारे अहंकार का भ्रम है बंधु। मेरे इस रूखे तन पर भी चींटी से लेकर कई जीव-जंतु व लता कुंज ईश्वर की कृपा से अन्न-जल से पुष्पित-पल्लवित होते हैं। अनुकूल स्थितियों में जीना तो सबको आता है, प्रतिकूलता में जीना साधना है। तुममें भी वही खिलता है जो प्रभु खिलाना चाहते हैं, तुममें ताकत है तो अपने वन के सूखे वृक्षों को हरा कर सकते हो क्या ? लेकिन इस रूखे पठार में जीवन खिलाना ईश्वर की ही कृपा हैं

यह सुन अंहकारी जंगल निरूतर हो गया।

****

www.gurdeepsingh.jimdo.com

****